Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 6, Dec. 2012
ISSN:-2231-5063

Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

डॉ. रामकुमार वर्मा के काव्य में राष्ट्रीय भावना

निकाळजे भुपेद्र सर्जेराव

सहायक प्राध्यापक,
राधाबाई काळे महिला महाविदयालय,

अनादि काल से मनुष्य के हदय में मॉ और मातृभूमि का सर्वोच्च स्थान रहा हैं। भारतीय संस्कृति में जननी, जन्मभूमि को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ माना गया हैं। जब पृथ्वी मनुष्य का भरण – पोषण करती है तब दुसरी रक्षा का दायित्व भी मनुष्य पर आता ही हैं। इसी दायित्व को जब एक जन – समूदाय ने ग्रहण किया तभी से 'राष्ट्र' और 'राष्ट्रीयता' संकल्पना का जन्म हुआ। डॉ. शुभलक्ष्मी के अनुसार '' राष्ट्रीयता एक मनोभाव है। श्रध्दा एंव भक्ति से पूर्ण एक आदर्श है जिसका आलम्बन राष्ट्र होता हैं। प्रत्येक दृष्टि से राष्ट्र को संपन्न देरवने और बनाने की भावना ही राष्ट्रीयता की मूलाधार हैं। भारतीय साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना प्राचीन काल से ही प्राप्त होती हैं । ऋषियों ने अपनी जन्मभूमि को 'माता' के समान महान मानकर उसे वंदन किया है। आधुनिक काल के लोकप्रिय हिंदी कवि रामकूमार वर्मा के काव्य में भी इसी राष्ट्रीयता की धारा का अनुभव होता हैं।

साहित्यकार राजकूमार वर्मा का रचना संसार मयूरपंखी रहा हैं। अपने 85 वर्षे के जीवन काल में ये करीब करीब 68 तक निरंतर लिखते रहे हैं । उनका लेखन उनके जीवन से अभिन्न है । उनके अनुसार, यूग की निन्दा और स्तुति तो पानी के बुलबुलों की तरह है जो क्षण में बिखर जाते हैं।1 उनके काव्य में नैतिकता, सामाजिकता, अध्यात्मिकता, दार्शनिक चिंतन, रहस्यवाद, प्रकृति प्रेम, सौदर्य आकर्षण, प्रेम से अनेकविध आयाम है। लेकिन उसके ठीक समानंतर राष्ट्रीय भावना पूरित रचनाओं का एक अविरल स्त्रोत प्रवाहित होता दिखाई देता है । उनके काव्य जीवन के आरंभ के साथ उनकी राष्ट्रीय भावना उनकी जीवन की गति के साथ जूडी हुई है। भारतीय राष्ट्रीयता की उभरती हूई भावना के वे निरंतर साथी रहे है । उनकी कविताओं में अभिव्यंजित राष्ट्रीयता के स्वर ही उन्हें उत्तर छायावादी कवियों से प्रथक एंव विशिष्ट बनाते है। अपनी काव्य यात्रा के बारे में वे

स्वयं लिखते है, इन कविताओं में मेरे जीवन की अभिव्यक्ति है और समय समय पर ये कविताऍ लिखकर मैंने संतोष की सॉस ली है। अपने नवयूवक जीवन से लेकर आज तक मैने जो कविताऍ लिखी है उन क्षणों की रेखाऍ है, जिसमें मैने जीवन की गति अनुभव की है, ऐसे जीवन की, जो पवित्र क्षण से उत्पन्न हुआ।2 डॉ. वर्मा ने बाल्यकाल में महात्मा गांधी के आंदोलन में भाग लिया। प्रभात फेरी में गींतो की आवश्यकता पडी तो काव्य रचना की और राष्ट्रीय सन्मान पाया। राष्ट्रीयता की मुल प्रेरणा कुछ विकसीत होकर 'वीर हमीर' और चित्तोड की चिता' खंडकाव्यों में प्रवाहित है। 'वीर हमीर' की रचना सत्रह वर्ष की अवस्था में की है। दस छोटे छोटे सर्गो में विभाजित यह खंडकाव्य रणथभोंर के इतिहास प्रसिध्द वीर हमीर की शरणागत वल्सलता की प्रशस्ति गाथा हैं। अल्लाउद्दीन के दरबार से भागकर आए हुए मंगोल को अभय दान देते हुए वीर हमीर कहते हैं –

''सत्य पर बलिदान होता ही हमारा धर्म हैं।
दीन दूखियों को बचाना ही हमारा धर्म है।
मातृ भू पर आज अपने प्राण सूख से वार दो ।
शूरवीरों । युध्द में निज सत्रू को ललकार दो ।''

रामकुमार वर्मा की कविता देशप्रेम, कर्तव्य भावना से ओतप्रोत है, साथ ही जनमानस में देशप्रेम में बीज बोने में समर्थ हैं। उनका काव्य तत्कालीन समाज में नवचेतना भरने का कार्य यह करता है, समाज को एक सोच और कृति करने की प्रेरणा और वास्तविकता में दर्शन यह उनके काव्य में हमें मिलते हैं। देशपर होने वाला आक्रमणों ने दहला दिया इसी कारण उन्होंने देश प्रेम का अलख जगाने के लिए भारतीय जवानों की नस नस में वीरता का संचार करनेवाली कविताऍ लिखकर अपने कवि धर्म को निभाया । इस काल में लिखी हुई कविताओं में उमंग, जोश, उष्मा

Title: *डॉ. रामकुमार वर्मा के काव्य में राष्ट्रीय भावना* **Source:Golden Research Thoughts [2231-5063]** निकाळजे भुपेद्र सर्जेराव **yr:2012 vol:2 iss:6**

DSpace™

और तरुणाई हैं। चीन और पाकिस्तान के युध्दों के समय यह उत्साह स्फूर्तिदायक बना हैं । सन 1964 में लिखा हिमालयसे कविता में कवि की ललकार सूनकर भारतीयों की नसें चटकाने लगती हैं।

ण्ण3ण्ण

'' आज तूम्हारी शपथ। प्राण में जाग उठी भीषण ज्वाला
अरि–मुंडो से पूर्ण बनेगी । यह अपूर्ण सी गिरिमाला
भूमि–भाग का एक एक कण, बना हुआ है अंगारा ।
शांतिदूत भारत ने है फिर । भैरव बनकर ललकारा ।''

कवि ने भारतीयों का खून खौला देनेवाली कविताएँ लिखकर उन्हें मॉ के दूध और बहन की राखी की शपथ देकर मरने एंव मारने के लिए प्रेरित किया। और राष्ट्रीय भावना को को जागृत करने का कार्य उनके काव्य के द्वारा हुआ है। कवि ने राष्ट्र के महान कर्णधारो के प्रति श्रंध्दाजली अर्पित की हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की श्रंध्दाजली के रुप में कवि सत्य और अहिंसा के सी मार्ग को इंगित करता है जो समस्त विश्व के कल्याण का एकमात्र मार्ग है .

'' चल पडे जिस ओर तूम वह पथ हुआ है राजपथ सा ।
जो किया संकेत तुमने वह हुआ जग को शपथ सा । ''
विरति वह थी जो कि जग पर सम्पदायें वारती है ।
वंदना के विनत नयनों में तूम्हारी आरती हैं।3

डॉ. रामकुमार वर्मा की जिन राष्ट्रीय कविताओं में 'उत्साह' का भाव प्रमूख रहा है जिसकी तुलना माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा, या सूभद्राकूमारी चौहान की रचनाओं से की जा सकती है। उनके लिए राष्ट्रीयता केवल हिंसात्मक भावों का प्रदर्शन मात्र नही हैं। उनकी राष्ट्रीयता का मूलाधार भारतीय संस्कृति है । 'एकलव्य' महाकाव्य में भी कवि ने राष्ट्रीय भावना वर्ग, वर्ण, जाति और धर्म आदि के भेंदो से उपर उठकर स्वस्थ भूमिका का निर्माण किया है। जो मनुष्य को विश्वबंधुत्व की ओर ले जाती है। राष्ट्रीयता की यह वाणी आत्म परिष्कार और ऐक्य विस्तार चाहती है। इस महाकाव्य के विषय में राजकूमार वर्मा जी लिखते है,

एकलव्य को मैं यूग बोध की दृष्टि से छायावादी अभिव्यंजना का श्रेष्ठतम महाकाव्य मानता हुँ।
वह कामायनी की तरह उर्ध्वमुखी ही नही है जो उस युग की सहज दृष्टि रही है.
उसमें समदिक सामाजिक संघर्ष तथा वर्ण व्यवस्था आदि की पृष्ठभूमि का भी मार्मिक चित्रण मिलता है।
उसमें छायावादी यूग की विद्रोह भावना को सशक्त अभिव्यक्ति मिली है।4

आधुनिक युग में भारत में सामाजिक धार्मिक और राजनीतिक आंदोलन हुए, उथलपुथल हुई इस स्थिती में यथार्थता का बोध कराने का काम कवित करते है। भारतीय जीवन को एक नई दिया आस्था और आशावाद देने का बल उनके काव्य से प्राप्त होता है।

कवि ने अपने काव्य के द्वारा निरंतर वीरता के महान आदर्श को प्रस्तुत किया मॉ भारती की रक्षा में अपने प्राणों की बलि चढाकर कृतार्थ होता हैं। सन 1971 में लिखि उनकी कविता

''अरुणिमा का त्यौहार'' में देश के नवयुवको को ललकारने को कवि में जोश और तरुणाई हैं।
''यह अरुणिमा का अमर त्यौहार हैं। रक्त रंग प्लाश जैसे तूम खिलो ।
चढ चलो निज देश की बलि –वेदिका पर टूटकर उड चलो तूम वायू गति से सूरभि जैसे छूटकर उस जगह स्वाधीनता का। राग रंजित द्वार हैं ।''

राजकुमार वर्माजी की कविताएँ पढकर तत्कालिन समाज के भितर राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने का प्रयास तथा आवाम के भितर विदेशीयों के प्रति भूजाएँ फडक उढती है और देश के प्रति एक समर्थन भाव यह मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. संस्मरणों के सूमन – डॉ. रामकूमार वर्मा . पृ. 143.44
2. डॉ. रामकुमार वर्मा . व्यक्तित्व और कृतित्व – डॉ. कमल सूर्यवंशी पृ. 62
3. आज के लोकप्रिय हिंदी कवि – डॉ. राधाकृष्ण श्रीवास्तव – पृ. 11
4. एकलव्य : डॉ. रामकूमार वर्मा पृ. 22